<u>मनोविज्ञान के सम्प्रदाय (Schools of Psychology)</u>

6. क्षेत्र सिद्धान्त (Field Theory):

कुर्ट लेविन (Kurt-Levin) ने मनोविज्ञान के क्षेत्र में क्षेत्र सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। लेविन ने कोहलर, कोफ्का, वर्दाइमर आदि गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों के साथ भी काम किया। अतः लेविन गेस्टाल्ट से बड़ा प्रभावित था। मनोविज्ञान में लेविन की दो किताबें **प्रिंसिपल आफ टोपोलॉजिकल साइकोलॉजी** और **कामश्चुअल रिप्रेजेन्टेशन एण्ड मेजरमेन्ट ऑफ साइकोलाजिकल कोर्सेज** प्रसिद्ध हैं। गेस्टाल्टवादियों से अलग विचारधार कुर्ट लेविन ने दी है। लेविन की ये विचारधारा मनोवैज्ञानिक है। लेविन के मनोवैज्ञानिक विचार स्वास्थ्य विज्ञान, तक सादिशता पर आधारित है। लेविन कहते हैं व्यवहार भूत या भविष्य पर नहीं निर्भर होता बल्कि वर्तमान पर निर्भर होता है। इस व्यवहार की व्याख्या लेविन ने क्षेत्र के आधार पर की। इसी कारण इनका मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त क्षेत्र सिद्धान्त कहलाया यहाँ क्षेत्र से मतलब है जीवन स्थान से ये जीवन स्थान एक व्यक्ति का मनोवैज्ञानिक जगत (Psychological World) होता है। मनोवैज्ञानिक जगत जो एक प्रकार से भौतिक सामाजिक पर्यावरण के रूप में होता है इस पर्यावरण का मनोवैज्ञानिक प्रत्यक्षीकरण करना एक व्यक्ति के व्यवहार का कारण बनता है।

अपने क्षेत्र सिद्धान्त को लेविन ने दो भागों में पेश किया जैसे संरचना और गतिशीलता लेविन के अनुसार व्यक्ति और उसके मनोवैज्ञानिक वातावरण के द्वारा 'क्षेत्र' की संरचना होती है। गतिशीलता के सम्बन्ध में लेविन कहते हैं कि गतिशीलता व्यक्ति को एक जीवन-स्थान में गतिशील या चलायमान बनाती है अर्थात् ये व्यक्ति में गति करने के लिये शक्ति पैदा करती है। ये शक्तियाँ मुख्यतः तीन प्रकार की होती हैं।

(अ) कर्षण शक्ति (Volence) : इसके द्वारा व्यक्ति या तो किसी काम को करता है या नहीं करता है। ये शक्ति दानों प्रकार की हो सकती है। सकारात्मक और नकारात्मक जो काम करने या न करने के लिये आदमी को प्रेरित करती है।

(ब) सदिश शक्ति (Vector): ये यन्त्र से सम्बन्धित होती है। इसके अनुसार बल के दो गुण होते हैं- 1. दिशा, 2. शक्ति। इन दोनों गुणों का योग सदिश होता है। वर्षण का स्वरूप दिशा का निर्धारण करता है अर्थात् अगर घर्षण धनात्मक है तो ये व्यक्ति को उस तरफ ले जाता है या जरा जीवन-स्थान की औरात्मक या धनात्मक सण ले जाता है जहाँ व्यक्ति को अपना व्यवहार प्रदर्शित करना है। पर अगर ऐसा काम करने में कोई बाधा आती है तो व्यक्ति भग्नाशा का शिकार हो जाता है और वो द्वन्द्र की स्थिति में आ जाता है।

(स) गति (Locomotion) जो तनाव इन्दात्मक स्थिति से पैदा होता है इसको कम करने वाली व्यक्ति की क्रियायें गति कहलाती है। ये गति आराम पाने के उद्देश्य से होती है। जिन सिद्धान्तों को लेविन ने बताया है इनसे व्यक्ति की प्रेरणा, व्यवहार का संगठन, अधिगम और पुनर्संगठन आदि में वांछित और दक्ष संरचना बनाने और गतिशीलता लाने में ये उपयोगी ज्ञान देते है।

क्षेत्र सिद्धान्त का शिक्षा में योगदान (Contribution of Field Theory in Education) - इसका योगदान शिक्षा में इस तरह से है -

1. लेबिन के हिसाब से बालक की शक्तियों शैक्षिक परिस्थितियों की जरूरतों, अध्यापन की विधियों और लक्ष्यों की पहचान करके एक अच्छी शिक्षा व्यवस्था की जा सकती है।

2. अधिगम से सम्बन्धित लेविन का क्षेत्र सिद्धान्त बहुत महत्व रखता है क्योंकि कर्षण शक्ति अधिगम को प्रभावित करती है। अध्यापकों को इस तरह

की परिस्थितियों को बनाना चाहिए जिससे बालक की सकारात्मक कर्षण शक्ति सक्रिय हो सके।

3. द्वन्द्व, तनाव, भग्नाशा, आराम आदि का उल्लेख लेविन ने क्षेत्र मनोविज्ञान में करके शिक्षा क्षेत्र में बड़ा उपयोगी कार्य किया। इसका कारण ये है कि इन सब बातों का बालक की निष्पत्ति पर बहुत प्रभाव पड़ता है।

4. क्षेत्र मनोविज्ञान का बालक की सही शैक्षिक परिस्थितियों के सम्बन्ध में बहुत महत्वपूर्ण योगदान है।

5. लेविन के जो विचार है उसमें व्यक्तिगत नित्रता का सिद्धान्त दिखाई पड़ता है और उसके उपयोग को शिक्षा में बल मिलता है।

6. आकांक्षा स्तर के विषय में (Level of Aspiration) विचार व्यक्त करके शिक्षा में अभिप्रेरणा को प्रोत्साहित किया गया है। आकांक्षा का स्तर शिक्षा के लिये जितना ऊँचा होगा, उतनी ज्यादा बालक शिक्षा में रुचि लेगा।

7. लेविन का जो समूह गत्यात्मकतावाद का विचार है वो सामूहिक शिक्षा को प्रभावशाली बनाने के लिये बहुत ही